RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

हैदर अली की कूटनीति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

DR MANJAY PD. KASHYAP

Assistant Teacher, Lakhisarai (Government of Bihar)

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 05 August 2017
Accepted: 10 Sep 2017
Published Online: 15 Sep 2017

कुंजी शब्द (Key words) :
वैभव, राजनीतिक योग्यता, प्रतिद्वन्दी, संग्राम

ABSTRACT

हैदर 1721 ई0 में पैदा हुआ था। एक सैनिक होने के नाते न तो वह वंश और न वैभव का ही दावा कर सकता था। बड़ी कठिनाई से वह मैसूर के मंत्री नंदराज की सेवा में भर्ती हुआ। उसने पहली बार यूरोपीय संग्राम को कर्नाटक युद्ध के त्रिचनापल्ली में देखा जिसमें पहले तो नंदराज ने अंग्रेजों के पक्ष में और बाद में फ्रांसीसियों के पक्ष में भाग लिया। फलतः कम समय में ही उसके संसाधन समाप्त हो गए। हैदर नंदराज को पराजित कर अपना प्रभुतव स्थापित करने योग्य हो गया। कुछ और विशेष कठिनाईयां, विशेषकर उसके अपने मंत्री खांडे राव का विरोध उसे 1761 ई0 तक सत्ता हथियाने से रोके रहा। बाद में उसने अपनी सैनिक और राजनीतिक योग्यता से अपने सारे प्रतिद्वन्द्वियों का सामना किया। प्रस्तुत अध्ययन में ब्रिटिश प्रतिरोध और अन्य चुनौतियों के बावजूद प्रथम मैसूर युद्ध तक हैदर अली की योग्यता और कूटनीति को विश्लेषित किया गया है।

शोध–प्रविधि :

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक है। इस अध्ययन में तथ्यों का संकलन द्वितीय स्त्रोतों से किया गया है। ऐतिहासिक पद्धति पर आधारित इस शोध–आलेख में विभिन्न शोध ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त सूचनाएं द्वितीयक स्त्रोत की सहायक सामग्री हैं।

विश्लेषण :

अनेक विरोधात्मक तत्वों ने मैसूर के साथ अंग्रेजों के संबंधो को प्रभावित किया। इनमे से मुख्य थे– मैसूर की अनोखी भौगोलिक स्थिति, दक्षिण में मराठा–विस्तार, उनके नवाब के साथ मद्रास सरकार के मधुर संबंध, फ्रांसीसियों के साथ हैदर के संबंध और उसकी अपनी योग्यता जिसके फलस्वरूप वह अन्य सरदारों से भिन्न हो गया था। मैसूर की भौगोलिक स्थिति ऐसी थी कि दक्षिण की सारी शक्तियां अपने बीच उसे स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य के रूप में देखना चाहती थी। मद्रास सरकार यह नहीं चाहती थी कि मराठे उसे हड़प ले और इसकी सीमा के निकट आ सकें। इसी तरह मराठे यूरोपीयों को उपकुली भाग तक ही सीमित रखना चाहते थे। हैदाराबाद का निजाम इसके लिए इच्छुक था कि न तो कंपनी और न मराठा मैसूर हड़प लें। फलतः एक शक्ति को दूसरी शक्ति से लड़ाकर मैसूर की अखंडता अक्षुण्ण रखने में हैदर को बड़ी मदद मिली।

1761 ई0 में पांडिचेरी के पतन से 1767 ई0 में मैसूर युद्ध के आरम्भ तक कर्नाटक में शांति बनी रही। कारण यह है कि इस समय मद्रास सरकार की नीति देशी शक्तियों के विवादों में अहस्तक्षेप की नीति थीं। कर्नाटक में हैदर की युक्तियों या चालों की अफवाहें फैलती रहीं लेकिन सरकार ने इसे ठीक ही हैदर के हित सम्बद्ध पक्षों का शत्रुतापूर्ण अधिप्रचार बतलाया। एक ओर संयम और दूसरी ओर कर्नाटक की प्रतिरक्षा की सतर्कता पर आधारित इस निर्धारित नीति में 1766 ई0 के मध्य से आमूल परिवर्तन हुए। कुछ बाह्य कारकों, जैसे मुगलों द्वारा कंपनी को उत्तरी सरकार का अनुदान, निजाम के साथ माधवराव की गुप्त–संधि, हैदर द्वारा मालावार की विजय और निजाम द्वारा हैदर की अर्काट सनद का अनुदान के फलस्वरूप मद्रास सरकार ने अपनी नीति बदल दी।

1760 ई0 में सत्तारूढ़ होते ही हैदर का मद्रास सरकार से मनमुटाव शुरू हो गया। सरकार की शिकायत थी कि वह फ्रांसीसी के साथ मिला हुआ है और उन्हें अपने यहॉ नौकरी देता है। उदाहरणस्वरूप, चेवेलियर डि मुए और मैस्ट्रे डि ला टोर के अधीन नवम्बर 1761 ई0 में एक टुकड़ी ने उसकी मदद की थी। अनेक सीमा विवादों के फलस्वरूप संबंध तनावपूर्ण हो गये थे। सीमा के दोनो तरफ सैनिकों के तैनात रहने से स्थिति और भी तनावपूर्ण हो जाती थी। इन तथ्यों के बावजूद भी मद्रास सरकार ने हैदर के प्रति शांति नीति का अवलंबन किया।

1761 ई0 से 1766 ई0 तक इसका उद्वेश्य उसे मराठों के विरूद्ध नियंत्रण के रूप में रखना था। फरवरी, 1765 ई0 में इसे माधव राव का एक पत्र मिला जिसमें हैदर के विरूद्ध सहायता मांगी गई थी। नवाब ने मराठों का साथ देने के लिए इस पर दवाब डाला क्योंकि इसके द्वारा ही मराठों को कंपनी के पक्ष में रखी जा सकती थी। किंतु, मद्रास के गवर्नर राबर्ट पॉल्क ने इस नीति का विरोध किया, क्योंकि मराठों का साथ देने का मतलब अनवरत युद्धों में संलग्न रहना था। इसके अतिरिक्त सरकार सोचती थी कि मराठों का साथ देने से निजाम हैदर का साथ देगा, युद्ध की अवधि बढ़ जाएगी और कंपनी के शामिल होने पर भी इसे कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि हैदर की अपेक्षा वे अधिक दुखदाई पड़ोसी होंगे। मार्च 1765 ई0 में हैदर ने माधव राव के साथ युद्ध बंद कर दिया।

नवाब और हैदर के बीच विवाद का एक अन्य कारण विद्रोही सरदारों को शरण देना था। जब चन्दा साहब का पुत्र रजा साहब ने हैदर के यहॉ शरण चाही तो नवाब मद्रास सरकार को युद्ध की घोषणा करने के लिए उकसाने लगा। यद्यपि इसने उसका प्रस्ताव इनकार कर दिया तथापि इसने कप्तान इब्राहीम बेनजीर के अधीन एक टुकड़ी वेलोर भेज दी। कर्नाटक के विरूद्ध हैदर की दुश्मनी की अफवाहें फैलने लगी। इसमें उनका हाथ था जिन्होने उसके साथ अपने मामले तय

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

नहीं किए थे। मालावार के सरकार और ट्रावनकोर का राजा इसी कोटि में थे।

1766 ई0 में मद्रास का गर्वनर राबर्ट पॉल्क था जिसकी नीति के फलस्वरूप वर्ष के अंत मे हैदर से युद्ध हुआ। 1766 ई0 के आरम्भ में मद्रास सरकार से हैदर के संबंध बिल्कुल मैत्रीपूर्ण थें उसने जनवरी में मेलपड़ी का दुर्ग जिसे मैसूर ने कर्नाटक युद्ध में जीता था, नवाब को लौटा दिया। लेकिन, हैदर चाहता था कि इसके बदले नवाब उसे करूर लौटा दे, जिसपर 1761 ई0 में रिचर्ड स्मिथ ने अधिकार कर लिया था। सरकार इस आधार पर इसे लौटाने से इनकार कर गई कि इसने इस पर तब अधिकार किया जब हैदर फ्रांसीसियों के साथ मिला हुआ था। और यह मूलतः नवाब का प्रदेश था जिसे कर्नाटक युद्ध में मैसूर ने हथिया लिया था। हैदर द्वारा मेलपड़ी का पुनर्स्थापन और दोस्ती का हाथ बढ़ाना उद्वेश्यहीन न थे। इस समय उसने मालाबार विजय का काम किया था और मद्रास सरकार को प्रसन्न रखना चाहता था।

दिसम्बर 1765 ई0 में तेलचरी उपनिवेश को मालावार विजय की तैयारियों का पता लग गया। बंबई सरकार के अनुदेश पर तेलचरी सरकार जेम्स रैली, विलियम टाउनशेड और राबर्ट रचार्कस को हैदर के पास भेजा। उन्हें उससे अनेक मालावार शक्तियों द्वारा दिए गए कंपनी की व्यापारिक सुविधाओं की संपुष्टि प्राप्त करनी थी। हैदर ने शीघ्र ही उनकी मांग पर सहमति दे दी और 23 फरवरी, 1766 ई0 में एक फरमान जारी किया जिसके द्वारा मालावार उत्पाद की थोक खरीद और निर्यात हेतु कंपनी के अधिकारों की संपुष्टि की गई। तत्पश्चात अभिकर्ताओं ने हैदर से कहा कि वह कंपनी के मित्र कोलातरी के राजा पर आक्रमण करें। हैदर ने ऐसा करने का वचन दिया बशर्ते कि राजा बेदनूर सरकार के बकाए 200,000 पैगोड़े दे दे। चूंकि यह संभव नहीं था, अतएव हैदर ने न केवल कोलातरी बल्कि कोटीओट, कार्टिनाड और कालीकट को भी विच्युत किया।

बोर्ड की बैठक बुलाई गई जिसमें हैदर को यह खबर करने का निर्णय किया कि यदि वह नीति नहीं बदलता है तो यह अपने मित्रों की सहायता करेगी। इसने एक सौ यूरोपीय की एक टुकड़ी तेलचरी भेज दी और रैली को कहा कि वह कंपनी के मित्रों को गुप्त रीति से सहायता करे और आवश्यकता पड़ने पर विशेष सहायता के लिए मद्रास सरकार से संपर्क स्थापित करें। इसने अलग से मद्रास सरकार को लिखा कि वह मैसूर में विकर्षण उत्पन्न करे और तेलचरी की मदद करे। इसने हैदर द्वारा प्राप्त अनुदान को असंतोषजनक और ''इसे खुश रखने तथा इसकी विजय योजनाओं में हस्तक्षेप न करने'' का एक आवरण बतलाया।

हैदर ने स्थिति का सामाना बड़ी कुशलता से किया। उसने बंबई सरकार को आश्वासन दिया कि कंपनी के विरूद्ध उसकी कोई शत्रुतापूर्ण युक्तियॉ नहीं है। उसने स्ट्रेसी का आदर सत्कार इस कदर किया कि उसने हैदर को हथियार आपूर्ति की अनुशंसा की। इस पर हैदर ने कंपनी को सुंदा की सभी गोलमिर्च का अनुदान दिया। फलतः संकट दूर नजर आने लगा। लेकिन, बम्बई सरकार ने अनुदेश दिया कि रैली गुप्त नीति से मालावार के सरदारों की सहायता करे। इसने पुनः एक बार गंभरी समस्या उत्पन्न कर दी। रैली ने लेफ्टिनेंट होपकिन्स के अधीन रंदात्रा में एक टुकड़ी भेजी जहॉ कंपनी की कुछ संपत्ति थी और अली राजा की सेना पड़ी हुई थी। होपकिन्स और अली राजा की सेनाओं के बीच मुठभेड़ हो गई जिसमें होपकिन्स एक तोप और चार यूरोपीयों को छोड़ते हुए पीछे लौटने के लिए विवश कर दिया गया। जब हैदर ने हस्तक्षेप किया और रंदाता कंपनी को लौटा देना चाहा तो रैली समझौता के लिए तैयार नहीं हुआ जब तक कि तोप और सामग्रियॉ भी नहीं लौटाई जाती है। इसका भी पालन किया गया। हैदर ने पाल्क से शिकयत की कि रैली द्वारा गुप्तरीति से रंदाता में टुकड़ी भेजने के कारण यह सब कठिनाई उत्पन्न हुई है। फिर भी यह घटना कंपनी और हैदर के समर्थकों के बीच पहली सशस्त्र मुठभेड़ थी। हैदर की नीति अभी भी स्पष्ट थी कि वह अंग्रेजों से संबंध विच्छेद नही करेगा। जो कुछ भी हुआ उसके लिए अफसोस जाहिर करते हुए और अपनी मैत्री का विश्वास दिलाते हुए उसने बम्बई सरकार को दो पत्र भेजे। अपने नेक इरादों के और सबूत के लिए उसने इसकी समुद्री गोदी में मरम्मत के लिए अपना जहाज भेजा।

हैदर की चाल काम कर गई। बंबई सरकार ने अपनी नीति पुनरीक्षित कर ली और आगे विरोध नहीं करने का निर्णय किया। इसने उसे जहाज की मरम्मत की अनुमति दे दी। इसकी नीति में परिवर्तन का कारण मद्रास सरकार द्वारा भेजा गया 22 मई का पत्र था जो इसके 4 अप्रैल के पत्र के जवाब में भेजा गया था। इसमें इसने मद्रास सरकार से मैसूर पर अभियान की प्रार्थना की थी। मद्रास सरकार ने इसका कड़ा विरोध किया था, क्योंकि इसने मुगलो से उत्तरी सरकारों का अनुदान प्राप्त किया था और यह उनके स्वाधिकार के लिए जी तोड़ कोशिश कर रही थी। निजाम इस प्रश्न पर टालमटोल कर रहा था और हैदर की सहायता चाह रहा था। ऐसे समय में मद्रास सरकार ने हैदर के साथ युद्ध नहीं करने का निर्णय लिया।

बंबई सरकार ने महसूस किया कि अन्य वजहों से भी हैदर के साथ शांति रखना आवश्यक है। वह इस समय तक मालावार का स्वामी बन गया था और काफी शक्तिशाली हो गया था। बोर्ड ने पूर्णरूप से अपनी नीति पुनरीक्षित की। इसने एक नई संधि का खाका तैयार किया और इसे हैदर के पास भेजा। इसके अनेक प्रावधान 1763 ई0 के संधि के समान थें इसका बारहवॉ अनुच्छेद उल्लेखनीय है जिसमें यह बतलाया गया कि हैदर किसी यूरोपीय शक्ति के साथ संधि नहीं करे और ट्रावरकोर के राजा पर आक्रमण न करे।

मालावार विजय हैदर के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसने उसे एक लम्बा उपकुली भाग दिया और उसे नौशक्ति बनाया। भारतीय शक्तियों में केवल वही एक शक्तिशाली नौ शक्ति का निर्माण कर सका। इस अभियान में उसने राजनीतिक पटुता और सैनिक शौर्य का उत्तम प्रदर्शन किया, क्योंकि एक ओर तो उसने बंबई और मद्रास सरकारों को अपने शांतिमय इरादा और विश्वास दिलाया तो दूसरी ओर उसने मालावार की शक्तियों पर द्रुत और प्रभावशाली ढंग से धावा मारा।

1764 ई0 में बक्सर के युद्ध के बाद पॉल्क के आवेदन पर क्लाइव ने मुगल बादशाह शाह आलम से सरकारों के लिए सनद प्राप्त की और 20 अगस्त, 1765 ई0 में उसे मद्रास सरकार के पास भेज दी। इस फरमान द्वारा तीन व्यक्ति

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

निजाम, वसालतगंज और हुसैन अली प्रभावित होने वाले थें। निजाम अपना पूरा उपकूली भाग खोनेवाला था, वसालतगंज

हो मुरार राव, कुड्डाया और कार्नल के नवाबों के साथ मधुर संबंध रखता था गुंटूर खोनेवाला था, और हुसैन अली अपना स्वार्थ खोनेवाला था। मद्रास सरकार इन तीनों का अतिक्रमण नहीं करना चाहती थी। अतएव, उसे गुंटूर लेने का निर्णय नहीं किया। यह अन्य चार सरकारों का अर्जन चाहती थी। अतः इसने तीन हजार से अधिक सेना इकट्ठी की और इनके कमान के लिए ब्रिगेडियर जनरल जॉन केलॉड को नियुक्त किया। यह सोचकर कि बरार के जानोजी के विरूद्ध माधव राव के साथ निजाम का कूच करना एक उपयुक्त अवसर है। 3 मार्च को मछलीपत्तनम में सनद प्रकाशित की गई अल्पावधि में कैलॉड ने चारों सरकारों को पराजित किया। नवाब ने इसका कड़ा विरोध किया तथा हैदर और मराठों की सहायता से अपने सरकारों को प्राप्त करना चाहा। कैलॉड और मछलीपत्तनम के प्रधान जॉन पेब्स ने निजाम को यह खबर करके धमकी देना चाहा कि कंपनी शाह आलम को प्रभावित करने के लिए कृतसंकल्प है। वह दक्षिण में दूसरे सूबेदार को नियुक्त करे और हमारी सेना उसकी मदद के लिए बंगाल और उपकुली भाग से कूच करने`क लिए तैयार हैं मद्रास सरकार ने इन कार्रवाइयों का अनुमोदन किया।

सनद सहित हैदर के शिविर में महफूज खां का आगमन, मैसूर में युद्ध की तैयारियां और रजा साहब द्वारा पांडिचेरी में हैदर का फ्रांसीसियों के साथ सम्पर्क ने मद्रास सरकार को विश्वास दिया कि हैदर को निजाम से अलग करना आवश्यक है। सरकार ने अपने एक असैनिक कर्मचारी जेम्स विर्चिचर को मैसूर भेजने का निर्णय किया। इसने उसे हैदर के साथ कोइ प्रतिरक्षात्मक संधि नहीं करने अपितु उसके विचार और युक्ति का पता लगाने का निर्देश दिया। साथ ही, वार्चिचर को हैदर द्वारा कर्नाटक की सनद प्राप्त करने की अफवाहों की सच्चाई का पता लगाना था। जब वार्चिचर मैसूर के लिए चल पड़ा, हैदर ने उससे मिलने से इनकार कर दिया। विवाजी अकेले ही मैसूर चल पड़े। पॉल्क ने वार्चिचर को निर्देशित किया कि हैदर द्वारा आमंत्रित किए जाने पर भी वह नही जाए, क्योंकि मद्रास सरकार निजाम से भी वार्ता कर रही है। और यदि वह सफल रहती है तो हैदर की मैत्री प्राप्त करने की कोई आवश्यकता न रहेगी।

अप्रैल 1767 ई0 में निजाम ने जनरल जोसेफ स्मिथ के सेनापतित्व में मैसूर पर आक्रमण कर दिया। इसी समय कर्नाटक के नवाब मुहम्मद अली का भई महफूज खां हैदर अली से मिल गया और उसने निजाम को भी गुट से अलग कर दिया। निजाम हैदर अली से जा मिला। अब अंग्रेज रह गए। फिर भी, जनरल स्मिथ ने सितम्बर 1767 ई0 में पंचागा घाट और त्रिनोपली मे हैदर और निजाम की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया। निजाम ने पुनः हैदर का साथ छोड़ दिया और अंग्रेजों से जा मिला। उसने अंग्रेजों के साथ फरवरी 1768 ई0 में एक संधि कर ली। संधि के अनुसार उसने अंग्रेजों और कर्नाटक के नवाब को हैदर के विरूद्ध सहायता देने का वचन दिया।

निष्कर्ष :

निजाम के विश्वासघात बाद भी हैदर का धैर्य न टूटा और उसने अदम्य उत्साह के शत्रु का सामना किया। उसने बम्बई की सेना को पराजित कर मंगलोर ले लिया। उसने अपनी सेनाओं को तीन भागों में बांटकर मार्च 1769 में तीन ओर से मद्रास पर आक्रमण कर दिया। आतंकित होकर अंग्रेजों ने 4 अप्रैल, 1769 ई0 को हैदर के साथ संधि कर ली। संधि के अनुसार, दोनो पक्षों ने एक–दूसरे के जीते हुए प्रदेशों को लौटा दिया, कंपनी ने युद्ध क्षतिपूर्ति देने का वचन दिया और दोनो ने वादा किया कि यदि किसी पर किसी बाहरी शत्रु का आक्रमण हुआ तो वे एक–दूसरे की सैनिक सहायता करेंगे। इस प्रकार मैसूर के प्रथम युद्ध में अंग्रेजों की करारी हार हुई। उनकी प्रतिष्ठा जाती रही। उन्हें विवश होकर हैदर से एक सुरक्षात्मक संधि करनी पड़ी।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1.सी0 यू0 एचिसन, संधि, अंग्रेज और सनद, जिल्द 9, पृ0 195।
2. तेलचरी से बम्बई, 10 मार्च, 1766 ई0 जिल्द 29, पृ0 236।
3. बोर्ड का कार्यवृत्त, 16 सितंबर, 1765 ई0, पृ0 850–51 ।
4. मद्रास से कोर्ट, 6 अगस्त, 1765 ई0 जिल्द 2, पृ0 20 ।
5. कैम्वेल की पत्रिका, 2 अगस्त, 1765 ई0।
6. वेस्टन से मद्रास, 13 मार्च,1763 ई0 जिल्द 49,पृ0 138।
7. बोर्ड का कार्यवृत्त, 1 जनवरी, 1762 ई0 जिल्द 48
8. स्मिथ से मद्रास, 3 सितंबर, 1760 ई0

© RRIJM 2015, All Rights Reserved